International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भित्तिचित्रण की चूरू शैली

डॉ. नरेन्द्रकुमार
व्याख्याता, चित्रकला विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

राजस्थान में मरु प्रदेश का चूरू जिला सम्पूर्ण रूप से बालुकामय होने की वजह से बाहरी आक्रमणकारियों से सदैव सुरक्षित रहा है इस कारण यहाँ पर शान्त वातावरण तथा आर्थिक उन्नति के फलस्वरूप कला एवं संस्कृति अपनी चरम सीमा पर रही, जिसमें यहाँ चूरू की हवेलियों, मन्दिरों, दूर्गों, छतरियों, कुओं, बावड़ियों, धर्मशालाओं आदि की भित्तियों पर किया गया भित्ति चित्रण कार्य व पद्धति उत्कृष्ट तथा अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम रही है।

चूरू जिले में भित्ति चित्रण हेतु भित्ति को विशेष रूप से तैयार किया जाता था जिसे यहाँ पर स्थानीय लोग व चेजारे घोटाई वाले (आलागीला) तथा लाक्षारस वाले नामों से सम्बोधित करते हैं, जो कि अपनी तकनीकि विशेषता के कारण वर्षा व प्रकृति के प्रहारों को सहते हुये आज भी अपना स्वरूप बनाये हुये है।

यहाँ के चेजारे (चितेरे) प्रायः हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों ही रहे हैं जिनमें मुस्लिम चितेरों की संख्या सर्वाधिक रही है। लेकिन भित्ति निर्माण एवं चित्रण पद्धत्ति में हिन्दू चेजारे अपनी वंशानुगत परमपरानुसार ही कार्य किया करते थे जिनमें मुख्य रूप से बाल चन्द कुम्हार, हुकमा कुम्हार, सरदार शहर, सुखा कुम्हार, खण्डेला आदि अनेक चेजारे जिन्होंने चूरू में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनेक चेजारों को प्रशिक्षण देकर तैयार किया जिनमें प्रमुख रुप से बीजो मिस्त्री, भोला बक्स, सांखला, उजीरो, खुमाराम कुम्हार तथा जगनो बाबर, समेर मल महात्मा आदि चित्रकार रहे जिनमें समेर मल महात्मा ने सरदार शहर में सर्व प्रथम तेल चित्रकारी का कार्य प्रारम्भ किया। 56

इनके अतिरिक्त मुस्लिम चेजारों में दीन मोहम्मद, अलाउद्दीन, रसूलो, गन्नी, अब्दुल, मोहम्मद खां, हनीफ पेन्टर, सरदार शहर इसीतरह चूरू में बदरू चेजारा, गामु चेजारा, मेनुद्दीन तथा वर्तमान में उस्मान, अली तथा रमजान आदि प्रमुख रहे हैं, जिनकी कला साधना के फलस्वरूप ही चूरू जिले की भित्ति चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष एवं उत्कृष्टता पर विद्यमानित रही है।

यहाँ के चेजारे (चितेरे) चित्रण कार्य में इतने दक्ष थे कि वे भित्ति पर लघु चित्रों, कागज चित्रों व कपड़ा चित्रण की भांति आधार मान कर मुक्त हस्त चित्रण कार्य करते थे और रंगों को भी परम्परानुसार विधिवत रूप से ही तैयार करते थे।

चूरू में भित्ति चित्रण हेतु भित्ति व उसके धरातल को विशेषरूप से तैयार करने के लिये यहाँ के चेजारे बड़ी सावधानी व कुशलता पूर्वक कार्य करते थे। जिसके आवश्यक एवं आधारभूत नियमों का ज्ञान यहाँ के चितेरे पूर्ण रूप से रखते थे जिनमें मुख्य रूप से निम्न सिद्धान्तों का भलि भांति पालन करते थे।

- चित्रण हेतु भित्ति का निर्माण व चयन में कुशलता तथा (अवलेह) मसाला बनाने की विधि एवं अनुपात की सहि जानकारी होना आवश्यकथा
- भित्ति पर चित्रण कार्य प्लास्टर के सूखने से पूर्व व फ्रेस्को सेको विधि में सूखने के पश्चात करना तथा रंगों के बारे में निश्चितता व तीव्र हाथ तथा सरलीकरण व विशिष्ठ रूप से तैयार करना
- यहाँ के चेजारे (चितेरे) रंगों द्वारा चूने के क्षारात्मक प्रभाव से परिचित थे, इसलिये रंगों को चूने के प्रभावानुसार ही प्रयोग में लाया जाताथा।57

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

– कार्य करने की ताव अर्थात दीवार को कितना भिगोना है, प्लस्तर को कितना और कितने अन्तराल के पश्चात परतें लगानी हैं आदि।

– पत्थर तथा देशी व वनस्पति रंगों का प्रयोग

– और धैर्य पूर्वक शान्त वातावरण में कार्य किया जाना आदि रहा है

चूरू जिले में भित्ति चित्रण कार्य प्रायः तीनों रूपों में मिलता हैः फ्रेस्को बनो, फ्रेस्को सेको व साधारण, लेकिन इन सबसे प्रमुख शैली फ्रेस्को बूनो घोटाई वाली पद्धत्ति रही है। जिसे चूरू के चेजारे यहाँ के स्थानीय उपलब्ध साधनों द्वारा ही पूर्ण करने में सक्षम रहे हैं। यहाँ की इस प्रमुख शैली केअन्तर्गत भित्तियों का निर्माण झाझड़ा, पत्थर व ईंटों से गणवा चुने के द्वारा चेजा तैयार किया जाता है। दीवारों की चिनाई के पश्चात् घरट से तैयार चूने से प्लास्टर व शिमला किया जाता था फिर उसे रगड़ कर कली की कुंची मारते थे और भित्ति (दीवार) को लगातार पानी द्वारा नम रखा जाता था। इसके पश्चात दीवारों पर घुटा हुआ कली का कड़ा लगाया जाता था। यह घुटाई का कड़ा कली व सिमले से तैयार होता था, जिसे रातभर पानी में भिगोकर रखा जाता था, तत्पश्चात् उसकी बारीक पीसाई करके घोल तैयार किया जाता था जिसे दीवार पर लगाने से पूर्व एवं पश्चात् बराबर पानी से गीला करना आवश्यक होता था। दीवार पर कड़ा लेपन के पश्चात् कड़े की पानी के साथ घुटाई की प्रक्रिया चलती रहती थी और जब तक दीवारों पर कड़ा उतनी मजबूती से पकड़ करले की वह हथौड़े से भी टूटना कठिन हो जाय। इसी दौरान घुटाई की प्रक्रिया के साथ–साथ भित्ति चित्रकार मुक्त हस्त रेखांकन व कई जगह खाके बनाकर चित्रण आदि कर देते थे तत्पश्चात् उनमें खनिज (देशी रंग) वनस्पती रंगों का प्रयोग कर चित्रों को पूर्ण करते थे रंगों के लेपन के पश्चात उनकी झावे से ठुकाई करते। यह प्रकिया उस समय तक चलती थी जब तक रंग और कड़ा एकीकृत न हो जाय, तत्पश्चात् अन्त में अकीक पत्थर या घुटी से घुटाई करते थे जिससे कड़ा एक दम रंग के साथ स्थायी एवं चमकीला रूप धारण कर लेता था। घुटाई द्वारा भित्ति चित्रों की इस प्रक्रिया को चूरू के स्थानीय लोग घोटाई (आराइश) वाले चित्रों के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नाम से सम्बोधित करते थे। जो कि चूरू जिले में सभी जगह के चित्रित स्थलों में देखने को मिलते हैं। जिनमें प्रमुख रुप से हजारी मल, सरदार मल कोठारी की हवेली चूरू, टकणेतों की छतरी, चूरु, भगवान दास बाघला शिव मन्दिर, चूरू, लोहियो की हवेली, पाद्दारो की हवेली, बाघलो की धर्म शाला एवं हवेली चूरु तथा तारानगर सती माता की छतरी, अनोप चन्द, बुद्धी चन्द जम्मट की हवेली, शुभकरण दासानी की हवेली सुजानगढ़ आदि उल्लेखनिय है।

इसके अतिरिक्त फ्रेस्को सेको विधि भी इसके समान्तर रूप से प्रचलित रही है। इस विधि के अन्तर्गत उपरोक्त विधि से तैयार भित्ति को पूर्ण रूप से सूख जाने पर भित्ति चित्रण कार्य करते थे। जिसमें चितेरे पेन्सिल व चीपं से मुक्त हस्त रेखांकन करते थे और कहीं कहीं कागज द्वारा बनाये खाके से भी छाप लेते थे। इस विधि के अन्तर्गत रंगों की मात्रा भी बढ़ जाती है व स्वर्ण रंगों का प्रयोग भी खुलकर किया जाता था तथा रंगों में माध्यम के रूप दुध व चीनी मिलाकर प्रयोग किया गया है। जो चूरू शैली की मुख्य विशेषता रही है।

सम्पूर्ण चूरू जिले में उपरोक्त दोनों विधियां ही व्यापक रूप से प्रचलित रही हैं तथा कहीं–कहीं पर साधारण भित्ति चित्र भी देखने को मिलते हैं, जिन्हें निम्न व गरीब वर्ग के लोग चित्रित करवाते थे। एवं बीसवी शती के प्रारम्भ से कई हवेलियो व मन्दिरों में भी इस प्रकार का चित्रण कार्य कियाजाने लगा जिसमें राजगढ़ में नेतमल सुराणा की हवेली, सरदार शहर जम्मटो एवं बरड़ीयों की हवेली तथा सालासर में हनुमान मन्दिर आदि स्थान रहें है।

घोटाई पद्धत्ति का चित्र धरातल तैयार करना स्थानीय कारीगरों द्वारा इसे जमीन बांधना व भीत तैयार करना कहा जाता है। जिसके लिए विभिन्न प्रकार की समाग्री व उपकरणों की आवश्यकता होती है।

सामग्रीः– कली जिसे स्थानीय रूप से ही तैयार किया जाता था। जिसका पत्थर मकराना व खिरोड़ से आता था तथा कुछ लोग मकराना से तैयार कली के टाटे भी मँगवा लेते थे। प्लास्टर के लिये खोर मिट्टी (खन्देड) व देशी चूना जिसे चूरू में निर्माणाधीन आवास के समीप ही तैयार करलेते थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कली तैयार करनाः–

कली तैयार करने के लिये चूरू में मकराने व खिराड़ के पत्थरों मो मंगवाया जाता था जिनहें स्थानीय लोग भट्टों पर पका कर तैयार करते थे लिकिन अधिकतर मकराने से सीधे टाटे भी मंगवा लेते थे। इन तैयार टाटों को बडे बर्तन ड्रम व छोटी होदी बनाकर उसमें आवश्यकतानुसार पानी डाल कर भिगो देते थे जिससे कली खदबदाने लगती और गाढ़ी होने पर और पानी डालते व हिलाते जाते हैं। कली में अधिक सफेदी लाने के लिये उसने गुड़ तथा खट्टा दही या (छाछ) भी कली की मात्रानुसार डालते हैं जब कली दो–तीन दिन पश्चात ठण्डी हो जाती थी तो उसका पानी निकाल कर उसमें दूसरा पानी डालते थे। इस तरह यह प्रकिया तीन–चार बार करते हैं। जिससे कली की तेजी समाप्त हो जाती है। जिसे बाद में किसी मटके या बड़े बर्तन में छान कर रख लेते हैं। भित्ति चित्रण के लिये कली जितनी पुरानी होगी उतनी चित्र भूमि स्थायी होती है। इस लिये चूरू में चेजारे भित्ति चित्रों के लिये कली भवन निर्माण के समय ही तैयार कर लेते थे जिससे भवन निर्माण होते होते कली ठण्डी व पुरानी पड़ जाती है।

चूना तैयार करना –

लोई व प्लास्टर के लिये चूना बनाने के लिये चूरू में ही स्थानीय चेजारे तैयार करवा देते थे। जिसके लिये चूरू के समीपस्थ गाँव देपालसर, लालासर, बासड़ा घंटेल, भेस्सर आदि स्थानों से माटी रोड़ी (2 से 3 इंच आकार के पत्थर के टुकड़े) लाकर लकड़ी के अपलों के ढेर मेंजलाकर पकाया जाता है और तत्पश्चात् उसे ठण्डा होने पर देसरे दिन निकाला जाता था जो कि एकदम महिन पाउडर की जैसे हो जाता था बाद में इस चूने कोमसाले के हेतु तैयार किरने के लिये इसके साथ 1/3 हिस्सा खोर मिट्टी जिसे खन्दैड़ से निकाला जाता था। के साथ 1 भाग उक्त विधि से तैयार किया गया देशी चूना घरट में डालकर उसमें मात्रानुसार पानी डाला जाता था उसके बाद ऊँट द्वारा घरहट को घुमाया जाता था। इस प्रक्रिया के लिए एक दिन का समय लगता था, दूसरे उस चूने को ठण्डा होने दिया जाता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

था। तत्पश्चात् उक्त विधि से तैयार किया गया चूना भवनों की चिनाई व प्लास्टर हेतु उपयोग में लिया जाता रहा है। जिसके कारण चित्र व आराइश आज भी ऐसे प्रतीत होते हैं मानो भित्तयों पर अभी ही कार्य पूर्ण किया गया है। जिसमें सुराणा हवामहल चूरु, बजरंग लाल मन्त्री का चोबारा आदि प्रमुख है। (चित्र सं. 1, 3, 6, 8, 18,144,145)

लोई तैयार करना–

घरट से तैयार किये गये चूने को ठण्डा होने पर उसे स्थानीय महिलाओं द्वारा पत्थर पर और बारीक पिसाया जाता था। जिससे वह और अधिक लोच पूर्ण व एकदम मुलायम हो जाता था। इस मसाले को प्लास्टर के उपर 1 सूत के बराबर लगाया जाता था जिसे यहां स्थानीय भाषा में लोई सूताना बोलते हैं। इस लोई को सुखने पर कली की पुताई करके छोड़ देते थे तत्पश्चात तीन–चार महिने या इसके भी पश्चात उक्त भित्ति पर चित्रण कार्य किया करते थे।

कड़ा तैयार करना

कड़ा तैयार करने के लिये चूरू के चेजारों ने मितव्ययिता व अपनी सूझ–बूझ का परिचय दिया है। इस विधि के अन्तर्गत मकराने की या स्थानीय तैयार की गई कली को उपरोक्त विधि से घोलकर तैयार कर लेते थे तत्पश्चात उसे कपड़े से छाना जाता था। छानने के पश्चात कली का पानी एक तरफ हो जाता था और जो कपड़े में व बिना ने रह जाता था उस मसाले को यहाँ सिलपट्टों पर स्थानीय महिलाओं द्वारा पिसवाकर एक दम बारीक मक्खन की जैसे लोचपूर्ण व मुलायम हो जता था। तत्पश्चात् उसे गीले प्लास्टर पर लगाकर उस पर चित्रण कार्य किया जाता था। कहीं–कहीं पर लोग भित्ति पर कड़ा करवा कर ही छोड़ देते थे जिस पर घुटाई के पश्चात् नारियल (खोपरे) के गीट से रगड़ कर और चमका दिया जाता था।59

भित्ति तैयार करने की विधि

भित्ति चित्रण की चूरू पद्धति के अन्तर्गत नगर की पुरानी हवेलियों को झाझड़ा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

(बलुआ) पत्थर जो देपालसर व इसके आस–पास से आता था। को घरट द्वारा तैयार चूने से चूनाई कि जाती थी तथा सामान्य व गरीब वर्ग के लोग मिट्टी से भी चिनाई करा लेते थे तत्पश्चात उक्त चूने से लिपाई कि जाती थी। इस लिपाई को थोडा सूखने के पश्चात् इसकी लकड़ी की थापी से ठुकाई (पिटाई) कि जाती थी जिसमें जितनी ज्यादा उक्त चूने की पिटाई होती थी उतना ही वह मजबूत होता था। उक्त दीवार की ठुकाई करते वक्त उसमें दरारे व पोल न रह जाये आदि बातों का भी पूर्ण ध्यान रखा जाता था। इस प्लास्टर को एक दम समान रूप से लाया जाता था।

तत्पश्चात् दीवार पर लोई करते थे जिसमें घरट द्वारा तैयार चूने को बारीक पिसवाकर उसे लगाते थे, जिससे लोई सूताना कहते हैं। जिसे काष्ठ की बटकडी से पानी के छिटे देते हुऐ रगड़ा जाता था। इस प्रक्रिया के अन्दर वायु आदि तथा किसी पत्थर का दाना या कुडा कुछ नहीं रहने देते थे। जब यह अच्छी प्रकार से घुट जाता था तब इसे सुखने पर कली की कुंची मारते व पुताई कर देते थे और जिस स्थान पर चित्रण करना होता था उसे स्थान पर लोहे की पत्ती अथवा झाडू से खुरदरा कर देते थे इसके पश्चात दीवार को कम से कम चार महिने व एक वर्ष तक छोड़ देते थे। यह दीवार चित्र का प्रथम आधार होती थी इसलिये इसे तैयार करने में पूर्ण सावधानी व धैर्य की आवश्यकता होती थी।

उपरोक्त प्लस्तर के सुखने के पश्चात दीवार पर ''कड़ा'' किया जाता था। दीवार पर कड़ा लगाने से पूर्व व पश्चात् दीवार को बराबर पानी से गीला रखना आवश्यक होता था दीवार पर कड़ा लेपन के पश्चात् पानी के साथ घुटाई की प्रक्रिया चलती रहती थी जब तक दीवार पर कड़ा उतनी मजबूती से पकड़ न कर ले कि वह हथौड़े से भी टूटना कठिन हो जाता था। इसी घुटाई कि प्रकिया के साथ ही यहाँ के चेजारे चीप (लोहे की नुकीली पत्ति) द्वारा मुक्त हस्त रेखांकन एवं चित्र बनालेते और स्थानीय खनिज रंगों द्वारा रंग भरकर चित्र पूर्ण कर देते थे तत्पश्चात नेहले से रंगों को बिठाया जाता था और थोड़ा सूखने पर उसकी झावे से घुटाई की जाती थी। यहाँ घुटाई तब की जाती थी जब तक रंग और कड़ा एकिकृत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

न हो जाय अन्त में अंकिक पत्थर व घुटी से घुटाई कि जाती थी जिससे ऐसी स्थिति आ जाती थी की कडा एवं रंग एकीकृत होकर स्थायी एवं चमकीला रूप धारण कर लेता था। इस घोटाई विधि द्वारा की गई भित्ति चित्रण पद्धत्ति को स्थानीय लोग घोटाई वाली पद्धत्ति के नाम से सम्बोधित किया करते है।

चित्रण प्रक्रिया

चित्रण प्रक्रिया के अन्तर्गत तैयार भित्ति पर सर्वप्रथम रेखांकन करना होता है। जिसके लिए चूरू के चितेरे कुशल और सक्षम थे वे सीधे ही भित्ति पर नुकीली चीप द्वारा मुक्त हस्त रेखांकन कर लेते थे इसके अतिरिक्त बड़े चित्र व अलंकरणों के समूहों को समान्तर बनाने के लिए यहां के चेजारे कागज का खाका बनाकर उस पर रेखांकन व चित्र तैयार कर बारीक सुई से छेद कर लेते थे तत्पश्चात उसे दीवार पर लगाकर कोयले का या हिरमिच के बारीक चूर्ण को पतले कपडे की पोटली में बांध कर उसे खाके पर से घुमाते थे जिससे उक्त चित्र की रेखाएं दीवार पर छप जाती थीं। उसके पश्चात छपी हुई रेखाओं पर फूंक मार कर हल्की कर दी जाती तत्पश्चात स्फुर्ती व सफाई से घोटाई चित्रों में रंगों को चित्र के चयन अनुसार ब्रस के माध्यम से लगया जाता था जिन्हें दो–तीन कोट में समान रूप से लगाते थे। रंग लग जाने के पश्चात उस स्थान व चित्र को ''नेहल्या '' द्वारा हल्के हाथ से पीटा व ठोका जाता था। (चित्र सं. 162) जिससे रंग कड़े और प्लास्टर तक अच्छी तरह समाहित हो जाते थे इसके बाद सभी रंगों को पूर्ण करके उन्हें भी इसी विधि से ठोका जाता था। अन्त में मुलायम कपड़े से गद्दीनुमा बनाकर उन रंगों वाले स्थान पर हल्के हाथ से घुमाते थे जिससे रंग कहीं से वापस निकलता तो उसे उसी क्षण नेहल्ला द्वारा वापस ठोककर जमा देते थे। बाद में चित्र को अन्तिम रूप देने के लिये शेड़ व छापा प्रयोग करते थे जिसके लिये चित्र में हल्के व गहरे रंगों को चित्रानुसार मोटी पतली रेखाओं के रूप में लगाते फिर उसे भी नेहल्या द्वारा ठोककर एकीकृत करते और अन्त में चित्र की ब्राह्य रेखाएं व चित्रों के मुख्य भागों को काली व गहरी रेखाओं द्वारा उभारा जाता था जिन्हें चूरू शैली में फींक करना कहते हैं। 50

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तत्पश्चात मोती आदि बनाने होते थे तो उन्हें खमीरे द्वारा तैयार सफेद रंग के बनाकर उन्हें भी पीट कर छोड़ दिया जाता था फिर उन पर मुलायम कपड़े की गद्दी फिरा कर देख लेते थे की कहीं से रंग वापस तो नहीं उतर रहा है।

इतनी प्रक्रिया होने के पश्चात खोपरे (नारियल) के सफेद भाग को पानी के साथ घिसकर थोड़ा गरम करके हथेली पर मल कर इस प्रकार थपथपाते थे कि खोपरे की चिकनाहट चित्रित स्थल पर अच्छी तरह से लग जाये। इसके बाद फिर एक बार मुलायम गद्दी फिरा कर उसकी अकीक पत्थर व घूंटी से घुटाई करते थे जिससे चित्र पर एक विशेष प्रकार की चमक आ जाती थी और रंग भी अधिक स्थायी हो जाते थे। जिसे चूरू में लोई चित्रण भी कहा जाता है।

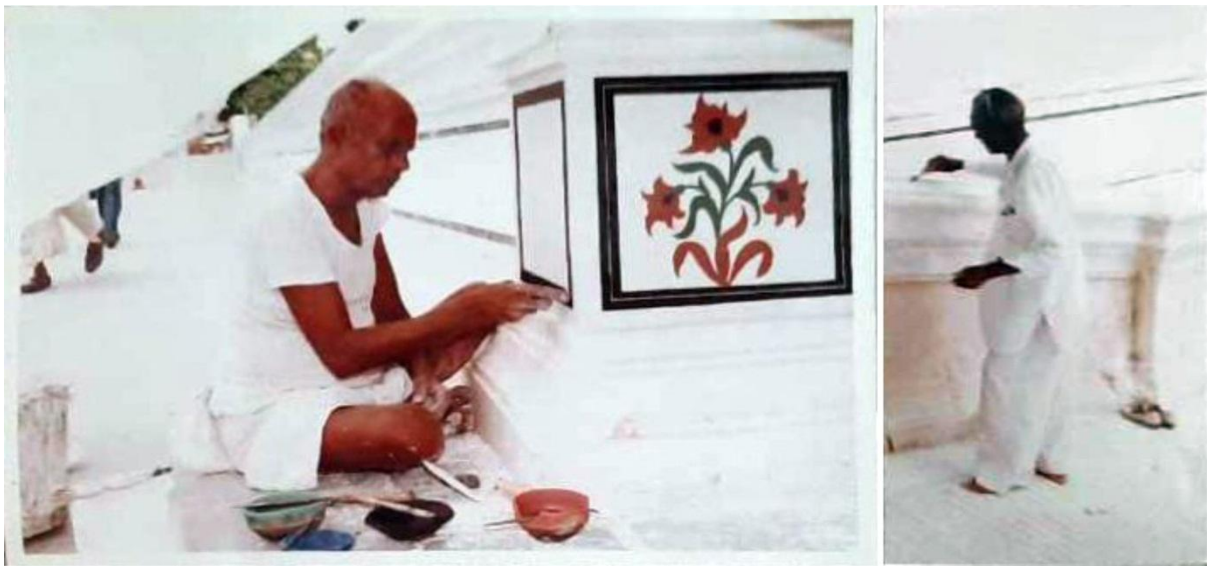

संन्दर्भ–

1. ए. घोष – अजन्ता म्यूरल्स, पृ. 54
2. डॉ. एन. एल. वर्मा – राजस्थानी चित्रण की विभिन्न पद्धतियाँ (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ), पृ. 129
3. डॉ. एस. परमासिवन टेक्निक ऑफ दी पेन्टिंग प्रोसेज इन द कैलाशनाथ एण्ड वेंकट

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पेरुमल टेम्पलस् एट कांजीपुरम नेचर, वोल्यूम. सी. एक्स. एल –II, 1938, पृ.757

4. जे. सी. नागपाल– एलालेसिस ऑफ सम मुगल वाल पेन्टिंग्स मेटिरियल, साईन्स एण्ड कल्चर, वाल्यूम–XX, 1964, पृ.122–125

5. टी. आर. गेरोला – वाल पेन्टिंग फ्रोम रंग महल चम्बा एण्ड देअर प्रीजर्वेशन स्टडीज इन म्यूसोलोजी, वोल्यूम –IV, 1968, पृ.9–24

6. देवकी नन्दन शर्मा – भित्ति चित्रण की जयपुर प्रणाली और इसका प्रमुख शिक्षण केन्द्र, वार्षिकी ललित कला अकादमी, पृ.5

7. ममता चतुर्वेदी – जयपुर शैली के भित्ति चित्र, पृ.38 (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ)

8. गोविन्द अग्रवाल चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, पृ.230

9. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ. 48,49

10. स्थानीय चेजारा रमजान एवं अली के अनुसार

11. स्थानीय श्रेष्ठी के मूनीम श्री हरीप्रसाद शर्मा, चूरू

12. स्थानीय चेजारा उस्मान अली के अनुसार

13. चित्रकार अली के अनुसार

14. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ.55

15. स्थानीय इतिहासकार, श्री गोविन्द अग्रवाल के अनुसार

16. सुबोध कुमार अग्रवाल एवं चेजारों के अनुसार जानकारी

17. श्वेतो रक्तस्तथा पीत कृष्णो हरित मेव च।

मूलवर्णः सामख्याताः पन्च पार्थिवत्सतं।। (विष्णुधर्मोत्तर 27 वां अध्याय, श्लोक 8)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

18. सितपीत समायोगः पाण्डुवर्ण इतस्मृतः।।सितरक्त समायोगः पद्मव इति स्मृतः।।
सितमील समायेगः कापोतं नाम जायते।पीतनी लसमायोगातद्धरितो नाम जायते।।
नील रक्त समायोगात काषायोनाम जापते। खत पीत समायोगाद गौर इत्यमिधा चेते।।

19. बद्रीनारायण मालवीया – विष्णुधर्मोत्तर में चित्रकला, पृ.47

20. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया – मध्यकालीन चित्र कर्म में प्रयुक्त रंगों की निर्माण विधि, वरदा, 1977

21. डॉ. ए. घोष – अजन्ता म्यूरल्स, पृ.

22. स्थानीय चितेरों रमजान, अली तथा मुनीम श्री हरिप्रसाद आदि के कथनानुसार

23. स्थानीय चेजारों के प्रयुक्त औजारों की जानकारी के अनुसार /डॉ. एन एल वर्मा – राजस्थान की चित्रण की विभिन्न विधियां, (अप्रकाशित शोधग्रन्थ), पृ.147,148